



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

देह की भाषा से कैनवास तक: छत्तीसगढ़ की गोदना परंपरा का अध्ययन एवं चित्रांकन द्वारा सांस्कृतिक संरक्षण

दीप्ति ओग्रे

पी.एच.डी. शोधार्थी,

राजकुमारी इंदिरा सिंह कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़

9527120550

diyaogre92@gmail.com

सारांश-

गोदना भारत की प्राचीन शरीर-अलंकरण परंपराओं में से एक है। छत्तीसगढ़ में यह परंपरा विशेष रूप से आदिवासी समुदायों और ग्रामीण महिलाओं के जीवन से जुड़ी रही है। गोदना केवल सौंदर्य-वर्धन या शरीर-सज्जा का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक पहचान, जीवन-संस्कार, धार्मिक विश्वास, सामुदायिक स्मृति और प्रकृति के साथ संबंध को व्यक्त करने वाली दृश्य कला है। छत्तीसगढ़ में गोदना को प्रायः महिलाओं द्वारा महिलाओं के शरीर पर बनाया जाता रहा है। इसके चिह्न स्थाई आजीवन शरीर पर बने रहते हैं और कई समुदायों में इन्हें ऐसा आभूषण माना जाता है जो मृत्यु के बाद भी व्यक्ति के साथ परलोक तक रहता है।

मानव सभ्यता के आरंभिक इतिहास में मानव समाज ने अपने अनुभवों, प्रकृति और सामुदायिक जीवन को शैल चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया। भाषा और लिपि के औपचारिक विकास से पहले चित्र, संकेत और प्रतीक संवाद के महत्वपूर्ण माध्यम बने। इस अध्ययन में शैल चित्रों के बाद देह को चित्रों का माध्यम बनाने की परंपरा के रूप में गोदना को देखा गया है। गोदना के चिह्न एक प्रकार की दृश्य भाषा या देह-लिपि का कार्य करते हैं। वे शब्दों की तरह ध्वनियों को नहीं लिखते, लेकिन समुदाय, पहचान, विश्वास, जीवन-चरण, प्रकृति और स्मृति से संबंधित अर्थों को संप्रेषित करते हैं।

इस शोध-पत्र का विशेष पक्ष चित्रांकन द्वारा सांस्कृतिक संरक्षण है। फील्ड वर्क के माध्यम से छत्तीसगढ़ की गोदना परंपरा से जुड़े डिजाइनों, स्थानीय नामों, अर्थों और मौखिक स्मृतियों का अध्ययन है। इसके बाद पुराने और विलुप्त होते गोदना-मोटिफ्स को चित्रों के माध्यम से कैनवास पर पुनर्सृजित करके संरक्षित करने का प्रयास किया गया है। आधुनिकता, शहरीकरण, बदलती जीवन-शैली, आधुनिक टैटू और पीढ़ियों के बीच पारंपरिक ज्ञान के कम होते संचार के कारण अनेक पुराने डिजाइन धीरे-धीरे विलुप्त हो रहे हैं। इस परिस्थिति में चित्रांकन केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि दृश्य अभिलेखन, सांस्कृतिक स्मृति और विरासत संरक्षण का माध्यम बन जाता है।

बीज शब्द- गोदना, छत्तीसगढ़, बस्तर, देह-लिपि, दृश्य भाषा, शैल चित्र, सांस्कृतिक संरक्षण, आदिवासी कला

1. प्रस्तावना-

भारत की लोक और आदिवासी कलाएं मानव समुदायों के दैनिक जीवन, विश्वास, श्रम, प्रकृति और सामाजिक संबंधों से निर्मित होती हैं। ये कलाएं केवल संग्रहालयों या प्रदर्शनी-स्थलों में दिखाई देने वाली वस्तुएं नहीं हैं, बल्कि समुदायों के जीवन का सक्रिय हिस्सा हैं। लोकगीत, नृत्य, वेशभूषा, आभूषण, भित्तिचित्र, धातु-कला और शरीर-अलंकरण इन सभी माध्यमों में समुदाय अपने अनुभव और पहचान को व्यक्त करते हैं।

गोदना इसी व्यापक कलात्मक परंपरा का एक महत्वपूर्ण रूप है। इसमें त्वचा पर सुई अथवा किसी नुकीले उपकरण की सहायता से बिंदु, रेखाएं और आकृतियां बनाई जाती हैं। इन आकृतियों में ज्यामितीय पैटर्न, फूल, पत्तियां, पशु-पक्षी, टोटम और अन्य सांस्कृतिक प्रतीक शामिल किए जाते हैं। छत्तीसगढ़ में गोदना का संबंध सामाजिक पहचान, जीवन-संस्कार, स्त्री-सौंदर्य और सामुदायिक विश्वासों से रहा है।

छत्तीसगढ़ में पांच संभाग हैं जिसमें बस्तर सांस्कृतिक रूप से अत्यंत समृद्ध है। यहां की जनजातीय संस्कृति जंगल, कृषि, पशु-पक्षियों, लोकदेवताओं, पर्वों, नृत्य और सामुदायिक जीवन से जुड़ी है। बस्तर की गोदना परंपरा को इसी प्राकृतिक और सामाजिक संदर्भ में समझना आवश्यक है। इस शोध का उद्देश्य केवल बस्तर की गोदना परंपरा का विवरण देना नहीं है। इसका उद्देश्य यह समझना भी है कि गोदना के डिजाइन किस प्रकार एक दृश्य भाषा के रूप में काम करते हैं और किस प्रकार इन पुराने डिजाइनों को चित्र तथा कैनवास के माध्यम से संरक्षित किया जा सकता है। अपने फील्ड वर्क से प्राप्त डिजाइन और मौखिक जानकारी को चित्रों में रूपांतरित करने का मैंने प्रयास किया है, ताकि वे डिजाइन जो शरीर पर धीरे-धीरे कम दिखाई दे रहे हैं, आने वाली पीढ़ियों के लिए मेरे चित्रों के माध्यम से सुरक्षित रह सकें।

2. अध्ययन की पृष्ठभूमि-

मनुष्य का सबसे सुन्दर स्वभाव रहा है अपनी भावनाओं को किसी न किसी माध्यम से व्यक्त करना, सभ्यता के आरंभ से ही मनुष्य ने चित्रों के माध्यम से अपने अनुभव व्यक्त किए। लिखित भाषा और लिपि के विकसित होने से पहले शैल चित्र मानव की दृश्य अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम थे। गुफाओं और चट्टानों पर बने चित्रों में पशु, मनुष्य, शिकार, प्रकृति और सामुदायिक जीवन से संबंधित दृश्य दिखाई देते हैं। कुछ विद्वानों ने गुफा-चिह्नों और अमूर्त संकेतों को लिखित शब्द से पहले की प्रारंभिक ग्राफिक संचार प्रणाली माना है।

इस शोध में गोदना को शैल चित्रों के बाद देह को चित्रों का माध्यम बनाने की प्रक्रिया के रूप में देखा गया है। शैल चित्रों में चट्टान एक स्थिर कैनवास थी, जबकि गोदना में मानव शरीर स्वयं एक जीवित कैनवास बन गया। शरीर पर अंकित चिह्न व्यक्ति के साथ चलते हैं और उसकी पहचान, विश्वास तथा सामुदायिक संबंधों को प्रदर्शित करते हैं। मानवशास्त्रीय अध्ययनों में पारंपरिक गोदना को सामुदायिक पहचान, सामाजिक और आर्थिक स्थिति, जीवन-मरण, अनुष्ठान, पूर्वजों के साथ संबंध व्यक्त करने वाली दृश्य प्रणाली के रूप में समझा गया है। इस

आधार पर गोदना को “देह-लिपि” कहा जा सकता है। देह-लिपि ऐसी दृश्य प्रणाली है जिसमें शरीर पर बने चिह्न सांस्कृतिक जानकारी को संप्रेषित करते हैं।

छत्तीसगढ़ में गोदना की परंपरा मुख्य रूप से महिलाओं के बीच विकसित हुई। गोदना बनाने वाली महिलाएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक डिजाइन, विधि, नाम और अर्थ पहुंचाती रहीं हैं। इस प्रक्रिया में गोदना बनाना केवल तकनीकी कौशल नहीं है, बल्कि महिलाओं के बीच सामाजिक संवाद और सांस्कृतिक ज्ञान-संचार का माध्यम भी रहा है।

3. शोध की समस्या-

आधुनिकता के दौर में छत्तीसगढ़ की पारंपरिक गोदना कला कई चुनौतियों का सामना कर रही है। युवा पीढ़ी आधुनिक टैटू, अक्षरों और नए प्रतीकों को अपनाने लगी है। पारंपरिक गोदना कई बार पुराना, असुविधाजनक या सामाजिक रूप से अप्रासंगिक समझा जाता है। इसके अलावा, पारंपरिक प्रक्रिया से जुड़ी पीड़ा और स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं भी इस कला के कम होने का कारण हैं।

गोदना की अनेक आकृतियां केवल बुजुर्ग महिलाओं के शरीर और स्मृति में सुरक्षित हैं। उनके साथ जुड़े स्थानीय नाम, अर्थ और कथाएं लिखित रूप में दर्ज नहीं हैं। यदि इन डिजाइन और ज्ञानधारकों का दस्तावेजीकरण नहीं किया गया, तो डिजाइन के साथ-साथ उनके सांस्कृतिक अर्थ भी समाप्त हो सकते हैं।

गोदना को अक्सर केवल टैटू या शरीर-सज्जा मानने से उसके ऐतिहासिक और संचारात्मक महत्व की उपेक्षा होती है। गोदना शरीर पर अंकित दृश्य इतिहास है। यह व्यक्ति की सामाजिक पहचान, जीवन के चरण, प्रकृति से संबंध और सामुदायिक स्मृति को धारण करता है।

इस शोध की मुख्य समस्या यह है कि बस्तर की गोदना परंपरा के पुराने डिजाइन आधुनिक परिवर्तन के कारण विलुप्त होते जा रहे हैं। इसलिए इन डिजाइनों का अध्ययन करने के साथ-साथ उन्हें चित्रों और कैनवास के माध्यम से संरक्षित करना भी आवश्यक है।

4. शोध के उद्देश्य-

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- छत्तीसगढ़ और विशेष रूप से बस्तर की गोदना परंपरा का सांस्कृतिक अध्ययन करना।
- गोदना को दृश्य भाषा और देह-लिपि के रूप में समझना।
- शैल चित्रों से देह-चित्रों तक मानव की दृश्य अभिव्यक्ति की निरंतरता का अध्ययन करना।
- गोदना-मोटिफ्स में प्रकृति, पशु-पक्षी, कृषि, स्त्री-अनुभव और सामुदायिक जीवन की उपस्थिति का विश्लेषण करना।



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

- फील्ड वर्क के माध्यम से पुराने और वर्तमान गोदना-डिजाइनों का दस्तावेजीकरण करना।
- गोदना के स्थानीय नाम, अर्थ, उपयोग और उससे जुड़ी मौखिक स्मृतियों को दर्ज करना।
- पुराने और विलुप्त होते गोदना-डिजाइनों को चित्रों और कैनवास के माध्यम से संरक्षित करना।
- चित्रांकन को सांस्कृतिक संरक्षण और दृश्य अभिलेखन की पद्धति के रूप में प्रस्तुत करना।
- आधुनिकता और शहरीकरण के कारण गोदना परंपरा में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
- आने वाली पीढ़ियों के लिए छत्तीसगढ़ की गोदना कला का दृश्य और कलात्मक अभिलेख तैयार करना।

5. शोध-पद्धति-

इस शोध फील्ड-आधारित और दृश्य-नृवंशविज्ञानात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। गोदना एक जीवित सांस्कृतिक परंपरा है, इसलिए इसे समझने के लिए लिखित स्रोतों के साथ-साथ स्थानीय समुदायों से संवाद आवश्यक है।

5.1 फील्ड वर्क

छत्तीसगढ़ में यात्रा करते हुए बस्तर के कुछ चयनित गांवों, स्थानीय हाट-बाजारों, सांस्कृतिक केंद्रों और कला-संबंधी स्थलों का अध्ययन। फील्ड वर्क में निम्नलिखित लोगों से संवाद किया गया।

- बुजुर्ग महिलाएं जिनके शरीर पर पुराने गोदना बने हुए थे।
- पारंपरिक गोदना बनाने वाली महिलाएं।
- स्थानीय कलाकार और शिल्पकार।
- युवा कलाकार जो गोदना को आधुनिक टैटू या चित्रकला में प्रस्तुत कर रहे हैं।
- गांव के बुजुर्ग और मौखिक इतिहास के जानकार।
- स्थानीय सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े व्यक्ति।

5.2 साक्षात्कार

साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी एकत्र किया गया। प्रश्न इस प्रकार हैं—

- आपने गोदना कब बनवाया?
- गोदना किसने बनाया?
- इस डिजाइन का स्थानीय नाम क्या है?
- इस आकृति का अर्थ क्या है?



- यह डिजाइन शरीर के इसी अंग पर क्या बनाया जाता है?
- क्या यह किसी संस्कार या जीवन-चरण से संबंधित है?
- क्या आज की युवा पीढ़ी इसे अपनाती है?
- पुराने और नए डिजाइन में क्या अंतर है?
- क्या गोदना बनाने वाली पारंपरिक महिलाएं अभी भी उपलब्ध हैं?
- क्या इन डिजाइन को चित्रों और कैनवास पर सुरक्षित रखना उचित होगा?

5.3 दृश्य दस्तावेजीकरण

गोदना-डिजाइनों के फोटोग्राफ, रेखाचित्र और पुनर्निर्मित चित्र तैयार किए गए। फोटो या चित्रण से पहले संबंधित व्यक्ति की अनुमति ली गई। यदि कोई व्यक्ति अपना चेहरा अथवा शरीर सार्वजनिक नहीं करना चाहता, तो केवल डिजाइन का रेखाचित्र बनाया गया।

5.4 चित्रांकन

चित्रांकन इस शोध की विशिष्ट पद्धति है। फील्ड वर्क के दौरान प्राप्त डिजाइन का दस्तावेजी रेखाचित्र बनाया गया। इसके बाद इन डिजाइन को अपने कलात्मक दृष्टिकोण से कैनवास पर पुनर्सृजित किया गया है। यह प्रक्रिया डिजाइन की नकल मात्र नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक स्मृति को एक नए दृश्य माध्यम में संरक्षित करने का प्रयास है।

6. गोदना: देह की भाषा-

गोदना के डिजाइन एक प्रकार की सांस्कृतिक भाषा का कार्य करते हैं। वे आधुनिक लिपि की तरह शब्दों को नहीं लिखते, लेकिन संकेतों, प्रतीकों और आकृतियों के माध्यम से अर्थ संप्रेषित करते हैं।

गोदना की भाषा के प्रमुख आयाम इस प्रकार हैं—

- पहचान : डिजाइन किसी समुदाय या सामाजिक समूह से संबंध व्यक्त करता है।
- जीवन-चरण : कुछ चिह्न युवावस्था, विवाह, मातृत्व या अन्य संस्कारों से जुड़े होते हैं।
- प्रकृति : फूल, पत्तियां, वृक्ष, पशु और पक्षी स्थानीय पर्यावरण से संबंध व्यक्त करते हैं।
- विश्वास : कुछ आकृतियां धार्मिक, आध्यात्मिक या सुरक्षात्मक अर्थ रख सकती हैं।
- सौंदर्य : गोदना शरीर को सजाने और सुंदर बनाने का माध्यम है।
- स्मृति : चिह्न परिवार, पूर्वजों और समुदाय की स्मृति को सुरक्षित रखते हैं।
- स्थायित्व : गोदना जीवन और मृत्यु के बीच पहचान की निरंतरता बनाए रखता है।

इस प्रकार गोदना मौन होते हुए भी अर्थपूर्ण है। वह शब्दों के बिना संवाद करता है। शरीर पर बने डिजाइन समुदाय के लोग पहचान और अनुभव के आधार पर पढ़ सकते हैं।

7. शैल चित्रों से देह-चित्रों तक-

शैल चित्र और गोदना मानव की दृश्य अभिव्यक्ति की लंबी परंपरा के दो महत्वपूर्ण चरणों के रूप में देखे जा सकते हैं। शैल चित्रों में मनुष्य ने चट्टानों पर अपने अनुभव और स्मृति को अंकित किया। गोदना में उसने अपने शरीर को उसी तरह के दृश्य अनुभव का माध्यम बनाया।

शैल चित्रों और गोदना में कुछ समानताएं दिखाई देती हैं —

- प्रकृति और पशु-पक्षियों की उपस्थिति।
- ज्यामितीय चिह्नों का प्रयोग।
- सामुदायिक स्मृति से संबंध।
- अनुभव और विश्वास का दृश्य रूपांतरण।
- भाषा और लिपि से पहले दृश्य संचार का महत्व।

यह दावा नहीं किया जा सकता कि छत्तीसगढ़ के सभी गोदना डिजाइन सीधे शैल चित्रों से बने हैं। लेकिन दोनों में प्रकृति, जीवन और सामुदायिक स्मृति की दृश्य निरंतरता अवश्य दिखाई देती है। मनुष्य ने पहले चट्टानों पर और बाद में अपने शरीर पर अपने संसार के चिह्न अंकित किए। इस दृष्टि से गोदना मनुष्य की रचनात्मक यात्रा का महत्वपूर्ण चरण है। शरीर स्थिर दीवार नहीं, बल्कि चलायमान कैनवास बन जाता है। व्यक्ति अपने साथ अपनी पहचान, इतिहास और विश्वास लेकर चलता है।

8. बस्तर की गोदना परंपरा-

छत्तीसगढ़ में गोदना सरगुजा और बस्तर जैसे आदिवासी बहुल क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रचलित रहा है। गोदना शब्द का संबंध शरीर में सुई भेदने की प्रक्रिया से है। पारंपरिक रूप से त्वचा में सुई या नुकीले उपकरण से चिह्न बनाकर उनमें सुई के माध्यम से काले प्राकृतिक रंग से भरा जाता है।

गोदना की परंपरा में महिलाओं की विशेष भूमिका रही है। कई स्थानों पर गोदना बनाने वाली महिलाएं अपनी कला और तकनीक परिवार तथा समुदाय की दूसरी महिलाओं को सिखाती थीं। यह ज्ञान मौखिक और अभ्यास-आधारित रहा है।

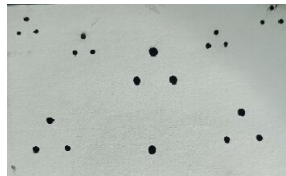
बस्तर की गोदना कला में स्थानीय जीवन के अनेक प्रतीक मिलते हैं। जंगली फूल, फसल, पर्वत, सूर्य, तारा, टिपका जैसे डिजाइन बस्तर की पारंपरिक कला के प्रमुख रूपों के रूप में मिलते हैं। इन आकृतियों को

प्रकृति, शक्ति, सुरक्षा और सामुदायिक इतिहास से संबंधित माना जा सकता है, हालांकि किसी भी डिजाइन का अर्थ स्थानीय ज्ञानधारकों से पुष्टि करके ही निर्धारित किया जाना चाहिए।

9. प्रमुख गोदना-मोटिफ्स-

9.1 बिंदु (टिपका)

बिंदु जिसे स्थानीय बोली में बुंदकी, टिपका कहा जाता है, गोदना की सबसे छोटी दृश्य इकाई है। बिंदुओं से सजावटी आकृति बनाई जाती है। बिंदु को शरीर के जिस भाग पर बनाया जाता है उस अनुसार व्यवस्थित किया जाता है।

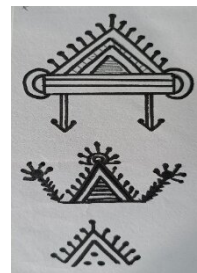


9.2 रेखाएं

रेखाएं किसी स्थान का प्रतीक माना जाता है जो एक सीमा तय करती है और अनुशासन का भाव देती हैं, जबकि घुमावदार रेखाएं गति और प्राकृतिक लय का संकेत देती हैं। रेखाओं की पुनरावृत्ति शरीर पर लयात्मक दृश्य प्रभाव उत्पन्न करती है।

9.3 ज्यामितीय आकृतियां

वृत्त, त्रिकोण, अर्धवृत्त, चौकोर रूप और क्रॉस जैसे रूप गोदना में दिखाई देते हैं। इनका अर्थ अलग-अलग समुदायों में बदल जाता है। इसलिए उन्हें सार्वभौमिक अर्थ देने के बजाय स्थानीय संदर्भ में देखना आवश्यक है।



9.4 पुष्प और वनस्पति

फूल, पत्तियां, बेल और वृक्ष, प्रकृति, उर्वरता और सौंदर्य से संबंधित होते हैं। छत्तीसगढ़ की गोदना परंपराओं में पुष्प और वनस्पति रूपों का व्यापक उपयोग मिलता है।

9.5 पशु-पक्षी

पशु-पक्षी जंगल के लोकविश्वास से जुड़े होते हैं। वे शक्ति, सुरक्षा, सौंदर्य, शिकार या सामुदायिक कथा का संकेत होते हैं।

10. गोदना और स्त्री-अनुभव-

गोदना परंपरा के जनक के रूप में स्त्री केंद्र में रहीं हैं। महिलाएं ही दूसरी महिलाओं के शरीर पर गोदना बनाती थीं। यह गोदना, गोदना बनाने की प्रक्रिया में महिलाओं के बीच ज्ञान, अनुभव और संवाद का माध्यम बनता है। गोदना में पीड़ा और सौंदर्य दोनों की उपस्थिति है। शरीर पर चिह्न बनाने की प्रक्रिया में पीड़ा होती है, लेकिन यह पीड़ा को कम करने के लिए गोदना गोदने के वक्त गीत भी गाने जाते हैं।

महिलाओं के शरीर पर बने डिजाइन उनके जीवन-चक्र की दृश्य स्मृति होती हैं। बचपन, युवावस्था, विवाह, मातृत्व और अन्य सामाजिक चरण शरीर पर अलग-अलग चिह्नों के रूप में दर्ज कराये जाते रहें हैं। कुछ गोदना-प्रतीक जीवन के घरेलू या वैवाहिक चरणों से जुड़े होने का उल्लेख मिलता है। उदाहरण के लिए “पहुंची, पैरी” जैसे मोटिफ को स्त्री के घरेलू जीवन में प्रवेश से संबंधित बताया गया है।

गोदना को केवल सामाजिक दृष्टि से देखना उचित नहीं है। कुछ महिलाओं ने इसे अपनी इच्छा से बनवाया होता है, जबकि कुछ ने सामाजिक या पारिवारिक दबाव में। इसलिए शोध में महिलाओं के गर्व, असहमति, पीड़ा, अनुभव और बदलती पसंद सभी को स्थान देना आवश्यक है।

11. गोदना और सामाजिक स्मृति-

गोदना शरीर को एक प्रकार के जीवित अभिलेख में बदल देता है। संग्रहालय में वस्तुएं सुरक्षित रखी जाती हैं, लेकिन गोदना में व्यक्ति स्वयं स्मृति का वाहक बन जाता है। शरीर पर बना चिह्न व्यक्ति के साथ चलता है और समुदाय की परंपरा को जीवित रखता है।

गोदना में व्यक्तिगत और सामूहिक स्मृति का संबंध दिखाई देता है। एक महिला के शरीर पर बना डिजाइन उसके व्यक्तिगत जीवन का हिस्सा है, लेकिन वह डिजाइन सामुदायिक परंपरा से भी जुड़ा हुआ है। इसलिए किसी एक शरीर पर बना चिह्न पूरे समुदाय की दृश्य स्मृति का प्रतिनिधित्व करता है।

बुजुर्ग महिलाओं के शरीर पर बने गोदना पुराने डिजाइन के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। वे डिजाइन के स्थानीय नाम, बनाने की विधि और अर्थ के बारे में जानकारी दे सकती हैं। यदि उनका ज्ञान दर्ज नहीं किया गया, तो डिजाइन के साथ मौखिक इतिहास भी नष्ट हो सकता है।



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

12. आधुनिकता और विलुप्ति का संकट-

आधुनिक शिक्षा, शहरीकरण, रोजगार, फैशन, मोबाइल मीडिया और वैश्विक टैटू संस्कृति ने गोदना की पारंपरिक शैली को प्रभावित किया है। युवा पीढ़ी आधुनिक टैटू, अक्षरों और लोकप्रिय प्रतीकों को अपनाने लगी है। पुराने डिजाइन कई बार अप्रचलित या असुविधाजनक समझे जाते हैं। पारंपरिक गोदना कलाकारों की संख्या कम होना भी चिंता का विषय है। जो कला कभी महिलाओं के बीच पीढ़ी-दर-पीढ़ी सीखी जाती थी, उसका ज्ञान अब सीमित लोगों तक रह गया है।

13. चित्रांकन और कैनवास द्वारा सांस्कृतिक संरक्षण-

इस शोध का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि गोदना की जानकारी केवल लिखित रूप में प्रस्तुत करना ही नहीं है। फील्ड वर्क के दौरान प्राप्त पारंपरिक डिजाइन, मोटिफ्स और आकृतियों को अपने चित्रों तथा कैनवास पर पुनर्सृजित करके संरक्षित करने का प्रयास है।

शरीर पर अंकित गोदना समय के साथ धुंधला हो सकता है, बदल सकता है या नई पीढ़ी द्वारा अपनाया न जाने के कारण सांस्कृतिक स्मृति से बाहर हो सकता है। चित्र और कैनवास इन डिजाइनों को एक वैकल्पिक दृश्य जीवन प्रदान करते हैं।

कैनवास पर बनाया गया चित्र गोदना की केवल बाहरी नकल नहीं है। यह उस डिजाइन की पुनर्स्मृति और पुनर्व्याख्या है। जब कोई डिजाइन शरीर से निकलकर कैनवास पर आता है, तो वह व्यक्तिगत शरीर से सामूहिक दृश्य अभिलेख का हिस्सा बन जाता है।

14. चित्रांकन की प्रक्रिया-

चित्रांकन को व्यवस्थित शोध-पद्धति के रूप में निम्न चरणों में किया जा सकता है—

चरण 1: डिजाइन का चयन

फील्ड वर्क के दौरान ऐसे पुराने डिजाइन चुने जाएं जो कम दिखाई देते हैं, जिनका उपयोग घट रहा है या जिन्हें केवल बुजुर्ग महिलाएं याद रखती हैं।

चरण 2: अनुमति और संवाद

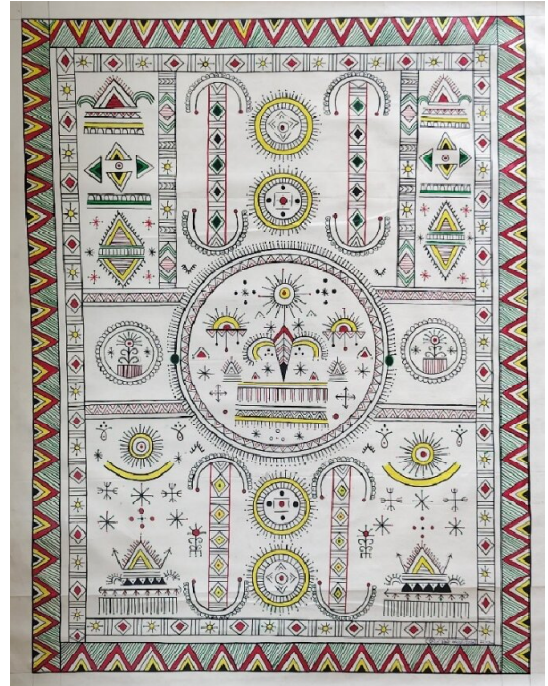
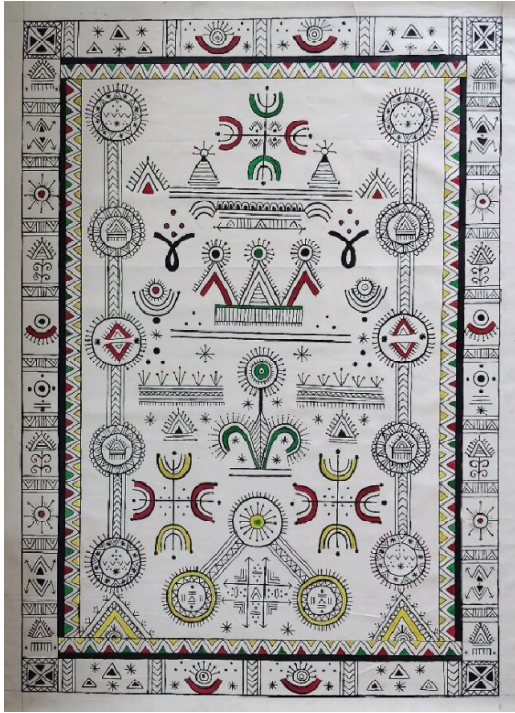
डिजाइन का चित्र बनाने से पहले संबंधित व्यक्ति या समुदाय से अनुमति ली गई। डिजाइन का नाम और अर्थ स्थानीय व्यक्ति से पूछा गया।

चरण 3: प्रारंभिक रेखाचित्र

शरीर पर बने डिजाइन का सटीक रेखाचित्र तैयार किया जाए। इस चरण में मैंने अपनी कल्पना कम से कम रखी।

चरण 4: कैनवास पर पुनर्सृजन

कैनवास पर डिजाइन को समकालीन कलात्मक भाषा में पुनर्सृजित किया गया।



15. निष्कर्ष-

छत्तीसगढ़ की गोदना परंपरा शरीर पर अंकित रेखाओं और आकृतियों से कहीं अधिक व्यापक सांस्कृतिक संसार को व्यक्त करती है। यह सामाजिक पहचान, प्रकृति, जीवन-संस्कार, स्त्री-अनुभव, सामुदायिक स्मृति और ऐतिहासिक निरंतरता से जुड़ी हुई है।

शैल चित्रों के बाद देह को चित्रों का माध्यम बनाना मानव की दृश्य अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण चरण था। भाषा और लिपि बनने से पहले मनुष्य ने चित्रों, संकेतों और प्रतीकों के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। गोदना इसी दृश्य संचार की जीवित परंपरा है। इसके मोटिफ्स को देह-लिपि या दृश्य भाषा के रूप में देखा जा सकता है।

बस्तर के पारंपरिक गोदना-डिजाइन आधुनिकता, शहरीकरण और बदलती जीवन-शैली के कारण विलुप्त होने की स्थिति में हैं। इनके साथ स्थानीय नाम, अर्थ और मौखिक इतिहास भी नष्ट हो सकते हैं। इसलिए इन डिजाइनों का फील्ड वर्क, साक्षात्कार, रेखाचित्र, फोटोग्राफी और डिजिटल अभिलेखन के माध्यम से दस्तावेजीकरण आवश्यक है।

इस शोध का विशेष योगदान चित्रांकन और कैनवास के माध्यम से संरक्षण का प्रयास है। पुराने गोदना-मोटिफ्स को अपने चित्रों में पुनर्सृजित करके उन्हें दृश्य स्मृति का हिस्सा बनाने की कोशिश है। ये चित्र केवल



(Shodh Samay International Journal of Multidisciplinary Research)

(Openly Accessible, Peer-Reviewed & Refereed Journal)

कलात्मक रचनाएं नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दस्तावेज हैं। वे व्यक्तिगत शरीर पर अंकित डिजाइन को सामूहिक दृश्य अभिलेख में बदलते हैं।

इस प्रकार “देह की भाषा से कैनवास तक” की यात्रा गोदना परंपरा को अतीत से वर्तमान और वर्तमान से भविष्य तक पहुंचाने का प्रयास है। चित्रांकन के माध्यम से पुराने डिजाइन सुरक्षित रह सकते हैं, आने वाली पीढ़ियां उन्हें जान सकती हैं और गोदना कला को केवल विलुप्त होती परंपरा के रूप में नहीं, बल्कि जीवित सांस्कृतिक भाषा के रूप में समझा जा सकता है।

संदर्भ सूची-

- Sahapedia. “Godna: The Practice of Tattooing in Chhattisgarh.” छत्तीसगढ़ की गोदना परंपरा, महिलाओं की भूमिका, सामाजिक पहचान और जीवन-संस्कारों का विवरण।
- Indian Culture Portal. “Godna Paintings.” भारत की गोदना चित्रकला और उसके विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से संबंधित स्रोत।
- Oxford Academic. “One Mark at a Time: Ethnographic Notes on Tattooing.” टैटू और शरीर पर अंकित सांस्कृतिक ज्ञान, पहचान तथा सामाजिक अर्थों पर शोधपरक स्रोत।
- व्यक्तिगत साक्षात्कार, बस्तर, छत्तीसगढ़।
- फील्ड नोट्स, बस्तर, छत्तीसगढ़।
- शोधकर्ता के चित्र और कैनवास कार्य।